Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI)
Volume 12, Issue 10, October 2021: 5307-5311

जैन शैली में चित्रित प्रमुख काष्ठ–पटलियों के चित्रों का विश्लेषण

पूनम रानी, सपना अग्रवाल
डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एण्ड परफार्मिंग आर्टस, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ
Email: poonam.rani@mangalayatan.edu.in

संक्षेपण–

भारतीय चित्रकला के व्यापकपरिप्रेक्ष्य मेंजैनशैली का एक निजीवैशिष्ट्य है।सर्वप्रथम् जैनकला का समृद्ध रूपमूर्तियोंतथामंदिरों की स्थापत्य कला के रूपमेंआरंभहुआ, जिसकेपश्चात् हीजैनकला का एक नयामौलिक रुप चित्रकला के रूपमेंआरंभहोताहै।जोभित्तिचित्रों एवंलघुचित्र शैली के विविध रूपांकनों, यथा–सचित्र ताड़पत्र, सचित्र वस्त्र पट एवंसचित्र कागजग्रंथआदिके रूपमेंप्रस्तुतहै।इनसभी रूपाकंनोंमेंनिर्मितहस्तलिखितग्रन्थोंमेंजैनचित्रकला के सुंदरउदाहरणतोहमेंपर्याप्तमात्रा मेंप्राप्तहुए हीहैंपरंतु इनके साथ–साथइनग्रन्थों के संरक्षण के लियेजोकाष्ठ की पट्टिकाएँ ऊपरऔरनीचे रखीजातीथीं, उन्हेंभीसुन्दरचित्रों से अलंकृतकियागयाहैजोकला क्षेत्र में एक विशेषस्थान रखतीहैं।

भारतवर्षमेंलकड़ी के पटरों का प्रयोगचित्रण के लिए प्राचीनकाल से हीकियागया, परन्तु ऐसाकोईभीचित्रित पटरा 11वीं 12वीं शताब्दी के पूर्व का प्राप्तनहीहै।इनपटरों के बीचमेंताड़पत्र के पन्नोंको रखकरउन्हेंऊपरऔरनीचेडोरी की सहायता से बांधदियाजाताथा, ऐसाकरने से ताड़पत्र के पन्नेजोबहुतकोमलहोतेथेउनकोसुरक्षित रखा जाताथा।चूंकिप्राप्ततााड़पत्रीय पोथियाँ 11वीं शती से उपलब्धहैअतः चित्रित पटरों का इतिहासभीइसी समय से प्राप्तहोता है।[1] काष्ठ–पटलियों के अंदरपृष्ठोंकोसहीप्रकार से रखने के लियेउसकेबीचमेंतथादोनोंपार्श्वोंमें एक–एकछेदकरकेसिल्क की मोटीडोरी से बाँधा जाताथा, जोसभीपृष्ठों से होतेहुयेकाष्ठ–पट्टिकाओंपरसमाप्तहोतीथी।डोरी के अंतिमसिरोंपरलकड़ी या हाथीदाँत का वाषरलगायाजाताथाजिसेग्रंथिभीकहाजाताहै। इस प्रकार, प्राचीन समय मेंकलाकारों द्वारापाण्डुलिपियाँ तैयार की जाती थीं।[2] पाण्डुलिपियों के ये काष्ठसचित्र आवरणविभिन्नसमकालीन घटनाओं व सांस्कृतिकविषयोंकोसंजोयेहुयेहैं।इनपटलियों के चित्रण को देखकरचित्रकार के सुदक्ष कलाकौशल व सूक्ष–बूक्ष का परिचय मिलताहै।

मुख्य शब्दावली– *पाण्डुलिपियां, काष्ठ–पट्टिकायें, श्रावक, साध्वी, 'सूत्रकृतांगवृत्ति',आवरण,*ओघ–निर्युक्ति

शोध लेख–

कलामर्मज्ञों ने जैनचित्र कलाकोदोभागोंमेंविभाजितकियाहै, जिसमेंताड़पत्र कालअर्थात् 11वीं, 12वीं और 13वीं शताब्दी के बीचजैन शैलीमेंनिर्मितपटरेअत्यंतहीप्रभावशालीहै।ताड़पत्र परचित्रों का स्थानसीमितथाक्योंकिबाकीस्थानोंपरविषय–वस्तुकोलिखा जाताथा, जबकिपटरोंपरलिखितअंश के लिए कोईस्थानछोड़ने की परम्परानहींथी।इसलिए इस पूरेस्थान का प्रयोगचित्रकार ने चित्र बनाने के लिए किया।[3]पटलियोंपरबने ये चित्र ग्रंथ के चित्रों से किसीभीप्रकारनिम्नस्तर के नहींथे, अपितुअधिकांशग्रंथोंमेंउनसेअधिकसुंदरतथाकलात्मकहोतेथे।जैसलमेरतथापाटनग्रंथभंडारों की पटलियाँ इस संदर्भमेंविशेषउल्लेखनीय हैं।तलवारों जैस`आकार की लकड़ी की चित्रित पटलियाँ व्यक्तिगत संग्रहों में भी देखने को मिलती हैं जिनमें कथात्मक अंकन किया गया है और फलक को लघुचित्रों में विभाजित कर के एक घटना के कई दृश्यों को क्रमबद्ध रूप से दिखाया गया है।[4]

काष्ठ–पटलीचित्रण की विषय–वस्तु

प्राचीन समय मेंजैन शैलीमेंदोप्रकार की विषय–वस्तु का चित्रण काष्ठ–पटलियोंपरकियागया।पहलाकमलपुष्प की बेलों के अन्दरअनेकपशु–पक्षी एवंमानवआकृतियों का चित्रण, दूसराजैनतीर्थंकरों के जीवन के प्रमुख ऐतिहासिक दृश्यों का चित्रण। पहलेवर्ग के अंतर्गतकाष्ठ–पट्टिकाओं के किनारोंपरबनीकमल की बेल–बूटों की सुन्दरसजावट के बीचअंकितहाथी, हंस के जोड़े, हिरण, बत्तख, स्त्री–पुरुषों के युग्मों के साथ–साथज्यामितीय अभिप्राय तथाफूल–पत्ती से बनेपैटर्नप्राचीनकालमेंपर्याप्त रूप से लोकप्रिय हुए।डॉ0 मोतीचन्द्र के अनुसारइनकमलपुष्पों की बेलों की शैलीऔरउनकाआलेखनअजंताचित्रों की याददिलातीहै।उन्होंनेऐसेकुछप्रसिद्ध पटरों का प्रकाशनभीकियाहै,जिनमेंअंकितकमल के बेलों की शैलीअजंताचित्रों की शैली से मिलती–जुलतीहै।[5]एक सुंदरपटलीमेंलता के वृत्ताकार घेरेअंकितनहींहैंलेकिनजलाशय मेंविकसितकमल–पुष्प की लहरदारलता के घुमावअंकितहैंजिनमेंहाथी, चीता, बंदर, मछली, कछुआऔरदौड़तीहुईमुद्रामेंपुरुष–आकृतियाँ अंकितहैं(चित्र सं0 –1)। यह पटलीजैसलमेर की समस्तपटलियोंमेंसबसेआरंभिककाल की प्रतीतहोतीहै।संभवतः गुजरातऔरराजस्थानमेंचित्रित हुईइनपटलियोंपरअजंता के आलंकारिकविषयों के चित्रण की परंपराप्रचलितथी।अजंता शैली के चित्रण की परंपराइनप्रारंभिकपटलियों के मात्र लता–वल्लरियों के अलंकरणमेंहीनहींअपितुनारी–आकृतिचित्रण मेंभी देखनेकोमिलतीहै।लंबी–लंबीविस्तृतआँखों के चित्रांकन की परंपरा, जोजिनदत्त–सूरि की पटलीमें देखीगईहै, वहभीप्रथमबारअजंता की गुफा सं0–2 के भित्ति–चित्रोंमेंपाईगईहै। यहीविस्फारितआँखों का चित्रण जैनकला की एक प्रमुख विशेषतामानाजाता है।[6]

चित्रित पटरों के दूसरेवर्गमेंजैनतीर्थंकरों एवं उनके जीवन संबंधीकथाओंकोलेकरचित्रण कियागयाहै।जिसकेकुछउदाहरण यहांप्रस्तुतहैं :–जैसलमेर के प्रसिद्ध 'जैनभण्डार' मेंदोसचित्र पटलियाँ (पाण्डुलिपियों के काष्ठ–निर्मित आवरण)उपलब्ध हैंजिनपरजैनमूर्ति–शास्त्र की विद्यादेवियों के चित्र अंकितहैं।इनपटलियों की रचनाप्रसिद्ध जैनविद्वान् 'जिनदत्त–सूरि' के जीवनकालमेंहुईहैं।इस पटलीमेंउन्हेंभूरेत्वचा–रंगमेंचित्रित कियागयाहै। इस चित्र मेंउन्हेंअपनेशिष्य जिनरक्षित, तीनश्रावकों(शिष्यों)तथाइनमें से एक श्रावक की दोपत्नियोंकोमहावीर के जीवन से संबंधितउपदेशदेतेहुए दर्शायागयाहै।पटली के मध्य मेंमहावीरआसनपरविराजमानहैंऔरउनकीदाहिनीओर 'जिनदत्त–सूरि' कोअपने शिष्यों 'गुणचंद्र–सूरि' और 'सोमचंद्र–सूरि' कोउपदेशदेतेहुए पुनः दर्शायागयाहै। यह पटली 'ओघ–निर्युक्ति' की पाण्डुलिपि का आवरणहै। 'ओघ–निर्युक्ति' जैनसाधुओं के लिए एक आचार–संहिताग्रंथहै। 'जिनदत्त–सूरि' सन् 1122 मेंआचार्यबनेऔर यह पटलीइसकेबादहीचित्रित की गईहोगी; अतः इसकारचनाकालसन् 1122 से 1154 के मध्य रहा है।[7]

12वीं शताब्दी का ही एक प्राचीनसचित्र काष्ठचित्रपटप्राप्तहुआहैजिसपरजैनमंदिरमेंजिनमूर्तिकोविराजमानदर्शायागयाहैतथामूर्ति के दोनोंओरपरिचारक खड़ेहैं।दाहिनेप्रकोष्ठमेंदोउपासककरबद्धमुद्रामें खड़ेहैं।दोव्यक्तिदुंदुभिबजानेमेंमस्तहैंऔरदोनर्तकियाँ नृत्य कररहीहैं।ऊपरआकाशकी ओरएक किन्नरी उड़ रहीहै। बाँयेंप्रकोष्ठमेंतीनउपासकहाथजोड़े खड़ेहैंतथा एक किन्नरआकाशमेंउड़ताहुआदर्शायागयाहै।मध्यमेंबने इस चित्र के दोनोंओरव्याख्यानसभाहोरहीहै। एक मेंआचार्य 'जिनदत्तसूरि' व उनके सम्मुख पं0जिनरक्षितबैठेहैं।अन्य उपासक–उपासिकाएँभीहैं।मुनि के सम्मुख स्थापनाचार्यरखा हैजिसपर"महावीर"लिखाहुआहै।दाहिनीओर की व्याख्यानसभामेंआचार्य 'जिनदत्तसूरि', 'गुणचन्द्राचार्य' से विचार–विमर्शकररहेहैं,जिनकेबीचमेंभीस्थापनाचार्यरखा हुआहै।मुनिजिनविजयजी के अनुसार यह फलक'जिनदत्तसूरि' के जीवनकाल का है।[8] यह सचित्र काष्ठ–पट27 इंच लम्बाऔर3 इंच चौड़ाहैतथामुनिजिनविजयजीकोजैसलमेर के ज्ञान–भण्डार से प्राप्तहुआ है।[9]

12वीं शतीके पूर्वार्धमेंचित्रित एक प्रसिद्ध काष्ठ–पटलीप्राप्तहुयीहैजिसपर *भरतऔरबाहुबलि*के युद्ध का दृश्यचित्रित है।इसकीरचनासिद्धराज जयसिंह (सन् 1094–1144 ई०) के शासनकालमेंविजयसिंहाचार्य के लिए हुईथी। यह

पटलीपहलेसाराभाईनवाब के पासथीऔरअब यह बंबई के *कुसुमश्रीर राजेय स्वाली* के निजीसंग्रहमेंहै।परंतुरचनास्थान के आधारपर यह मूलतः जैसलमेर–भण्डार की हीपटलीहै।इसकेपृष्ठ भागपर घुमावदारकमल–पुष्प की लता–वल्लरियों के वृत्ताकारोंमेंहाथी, पक्षीऔरपौराणिक शेरों के बहुतसुन्दरआलंकारिकअभिप्राय चित्रित हैं।[10]परंतु इस पटलीमेंचित्रितभरतऔरबाहुबलीके युद्ध का चित्रांकनदर्शनीय है।जिसमेंभरतऔरबाहुबलिअपनी–अपनीसेना के साथरथपरसवारआमने–सामनेदिखाए गए हैं(चित्र सं0 – 2)। रक्तिमपृष्ठभूमिपरउनके धनुषसंधान, युद्ध की तीव्रताऔरआक्रोश का चित्रण चित्रकार ने अत्यंतवेगपूर्णआकृतियों के द्वारासशक्त रूप से किया है।[11]यह काष्ठ–पटली30 इंच लम्बी व पौनेतीन इंच चौड़ी है।[12]

जैसलमेर के ज्ञान–भण्डार से मुनिजिनविजयजी द्वारा30 इंच लम्बाऔर3 इंच चौड़ाएक औरसचित्र काष्ठ–पटप्राप्तहुआ है।[13]यह पटलीपहलेमुनिजिनविजयजी के पासथीपरंतुवर्तमानमें एक निजीसंग्रहमेंसंग्रहितहै।इस पटलीपर उस प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का दृश्य अंकितहैजोमहान् श्वेतांबरतर्कविद् 'वादिदेवसूरि' औरसुप्रसिद्ध दिगंबरआचार्य 'कुमुदचंद्र' के मध्य सन् 1124में 'सिद्धराज जयसिंह' की राज्यसभामेंहुआथा, जिसमें 'वादिदेवसूरि' ने अभिमानी 'कुमुदचंद्र' कोपरास्तकियाथा।यह पटली इस शास्त्रार्थ से अधिक से अधिक एक वर्ष की अवधिमेंचित्रित की गयीहै। यह शास्त्रार्थभी छह मासतकचलाथा।इसकेअनुसार इस पटली की रचनालगभगसन् 1125 मेंहोनी चाहिए।[14] इस फलक के अग्रभागपरआशापल्लीमन्दिर के व्याख्यानभवनमें, देवसूरि एक पीठवालेआसनपरबैठेचित्रित कियेगयेहैं। इनके पीछे एक शिष्य औरसामनेस्थापनाचार्य रखा है।सम्भवतः वेअपनेशिष्य माणिक्य कोकुछ समझा रहेहैं।संभवतः दिगम्बर मत के 4 सामान्य व्यक्तिफर्शपरबैठेहैं, जोवस्तुतः कुमुदचन्द्र के भेदियेहैं।अगलेभागमेंकुमुदचन्द्रपीठफलक के सहारेबैठेहैं, उनके आगे व पीछे एक–एकशिष्य तथाहाथमेंपिच्छीहै।अगले खंडमेंदेवसूरि के साथदोशिष्य व दोश्रावकहैंतथासन्देशवाहकउन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती दे रहाहै।अगले खण्डमेंजमीनपरसामान्य जनों के साथबैठेहुयेकुमुदचंद्रतथादुर्व्यवहार से पीड़ित वृद्धा साध्वीकोदर्षायागयाहै।अगलेभागमें यही वृद्धा साध्वीदेवसूरि से अपनेसाथहुयेदुर्व्यवहार की शिकायतकररहीहै।इसकेबादकुमुदचंद्रसंदेशवाहक का सन्देशसुनतेहुयेदिखायेगयेहैंतथाअन्तिम खण्डमें एक औरतव्यापारीको घीबेचतेहुयेचित्रित की गयीहै।फलक के पीछेदोनोंआचार्यशिष्य मंडली के साथपाटन की तरफजातेहुयेदिखायेगयेहैंजिसमेंदेवसूरि के दृश्य मेंअच्छे शकुन व बायेंहिस्सेमेंकुमुदचन्द्र व उनके दल के साथ अप–शकुन(कोबरा) चित्रित हैं।इसकेबादभागमेंकुमुदचन्द्रपाटनपहुँचकरराजमाता से मिलनेजानेपररक्षक द्वारारोकदियेगये, चित्रित कियेगयेहैं।[15] (देखें, चित्र सं0 – 3)।

मुनिपुण्यविजयजी के संग्रहमें एक क्षतिग्रस्तपटली, जिसपरमहावीर का चित्र अंकितहै,प्राप्तहुयीहै।शैलीगततुलना के आधारपरइस पटली की शैलीजिनदत्त–सूरि की पटलियों से किसीभीप्रकारभिन्ननहींहैजबकि यह पटलीजिनदत्त–सूरिकी पटलियों से कुछकालपूर्व की प्रतीतहोतीहै। इसआधारपरइस पटली का रचनाकाल11वीं शताब्दी केउत्तरार्द्ध का मानागया है।[16]वि0 सं0 1456मेंलिखित 'सूत्रकृतांगवृत्ति' की ताड़पत्रीय प्रति का भी एक काष्ठपटउपलब्ध हुआहै, जोसाढ़े चौंतीस इंच चौड़ाहै। इस पटलीपरमहावीर के जीवन की घटनाओं से संबंधितचित्रण कियागयाहै।इसीप्रकारवि0 सं0 1425 मेंलिखित 'धर्मोपदेशमाला' कीसवापैंतीस इंच लंबीऔरसवातीन इंच चौड़ी एक काष्ठ–पटलीहैजिसपरजैनतीर्थंकरपार्श्वनाथ की जीवन–घटनाएंचित्रित हैं।[17]निजीसंग्रहालयोंमेंसंग्रहितइस प्रकार की चित्रित पटलियांकलाइतिहासमेंविशेषमहत्व रखतीहैं।पश्चिमीभारतीय शैली की समस्तविशेषताओं से अभिभूत यह चित्रित आवरणचित्रकार की अद्भुतप्रतिभा के प्रतीकहैं।

निष्कर्ष–

उपरोक्तचर्चितसभीकाष्ठ–पटली–चित्र सामान्यतः जैनशैलीमेंबनायेगयेहैं।इनपटलियों के अतिरिक्तऔरभीअनेककाष्ठ–पटलियाँ प्रकाशमेंआयीहैंजो मुख्यतः 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा13वीं एवं14वीं शताब्दीमेंरचीगयीहैं।इनदफ्तियों या पटलियोंपरनाट्यपूर्णगतिमानता के साथ–साथअंकितसूक्ष्म बेल–बूटों की चित्रकारीकलाकार के धैर्यऔरसाधना का अद्वितीय

उदाहरणहै।परंतुकालचक्रबननेवालीइनपटलियोंमेंपरंपरागतविशेषताओं एवंऔपचारिकता की प्रवृत्तिबढ़ती हुईपाईदेखीजासकतीहै, जिसकेफलस्वरुप इनके अलंकरणों, लहरदारलताओंमेंअंकितपशु–पक्षीऔरकमल–पुष्पों के अंकनमेंकलात्मकआनंद का अभावपायाजाताहै, तथाइनमें 'जिनदत्त–सूरि' के पटलीसमूह–सागंभीरआकर्षणअथवा 'देवसूरिकुमुदचंद्र' शास्त्रार्थवालीपटलीकी–सी चमक औरउज्ज्वलतानहींपाईजाती।यह आवश्यक नहींहैकिकिसी एक या एक जैसेसमानकालमेंविभिन्नचित्रकारों द्वारारचे गए चित्रोंमें एक ही शैली का उपयोगकियाजाए।इसलिए किसी शैलीगतभेदकोअनिवार्य रूप से किसीकाल या प्रान्त का भेदनहींमानाजासकता।अतः इनचित्रोंमेंविभिन्नकालखण्डोंऔरस्थानीय प्रकृति के कारणचित्रण–पद्धतिमेंभिन्नता स्वंय हीआतीगयी।

भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्नस्थानोंपरअबभी ऐसीहजारोंप्राचीनपाण्डुलिपियाँ विद्यमानहै, जिनका अध्ययन या प्रकाशन नही होसकाहै।दरअसल, यह अनुमानलगानालगभगअसम्भवहैकिइनमें से कितनीपाण्डुलिपियाँ नष्टहोचुकीहैऔरकितनी खोजीजानीबाकीहै।परन्तु यह स्पष्टहैकिकलाक्षेत्र मेंइनपाण्डुलिपियों व उनके अलंकृतकाष्ठआवरणोंमेंचित्रकार ने कलाजगतमेंचित्र शैली की अनुपम क्षापछोडीहै।

चित्र सं0 – 1

एकचित्रांकितकाष्ठ–पटली का दृश्य

लगभग11-12वीं शताब्दी, जैसलमेरभण्डार

चित्र सं0 – 2

भरतऔरबाहुबलीका युद्ध चित्रांकन दृश्य

1122-54 ई0, साराभाईनवाबसंग्रह

(1)

(2)

चित्र सं0 – 3

देवसूरि–कुमुदचंद्र–शास्त्रार्थ की काष्ठ–पटलियों के अग्र व पिछलेभागकाचित्रांकन दृश्य

गुजरातमेंलगभग1125 ई0मेंनिर्मित

द गोएंकाकलेक्शन, मुंबई

सन्दर्भसूची :–

1. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 55
2. आनन्द, आशा; सचदेवा, सीमा : भारतीय चित्रकलापालशैली से पहाड़ीतक; चित्रायनप्रकाशन,मुजफ्फरनगर (उ0प्र0);2004; पृ0 सं0 –12
3. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 55
4. श्रोत्रिय, शुकदेवः भारतीय चित्रकलाशोध–संचय, 1997;चित्रायनप्रकाशन, मुजफ्फरनगर; पृ0 सं0 –100
5. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 56
6. घोष, अमलानंदः जैनकला एवंस्थापत्य, खण्ड–3; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; 1975; पृ0 सं0 – 405, 406
7. घोष, अमलानंदः जैनकला एवंस्थापत्य, खण्ड–3; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; 1975;पृ0 सं0 – 403, 404
8. जैन, राजेशः मध्यकालीनराजस्थानमेंजैन धर्म; पार्श्वनाथविद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी; 1991–92; पृ0 सं0 – 274
9. जैन, हीरालालः भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेशशासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975;पृ0 सं0 –374
10. घोष, अमलानंदः जैनकला एवंस्थापत्य, खण्ड–3; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; 1975; पृ0 सं0 – 408
11. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 57
12. जैन, हीरालालः भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेशशासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975;पृ0 सं0 –375
13. वही पृ0।
14. घोष, अमलानंदः जैनकला एवंस्थापत्य, खण्ड–3; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; 1975; पृ0 सं0 – 409
15. जैन, राजेशः मध्यकालीनराजस्थानमेंजैन धर्म; पार्श्वनाथविद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी; 1991–92; पृ0 सं0 – 275
16. घोष, अमलानंद : जैनकला एवंस्थापत्य, खण्ड–3; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; 1975; पृ0 सं0 – 407, 408
17. जैन, हीरालाल : भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेशशासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975;पृ0 सं0 –375